दिव्य जीवन की उत्तम धारणाएँ

शुभ भावनाओं के प्रयोगी बनो

१. अपने शुभ भावनाओं के भण्डार इतने भरो जो सारे संसार को बांट सको। याद रखो–तुम्हारी शुभ भावनाएँ दुख–अशान्ति में बेचैन आत्माओं को राहत देगीं.... अनेकों के जीवन में आशाओं के दीप जलायेगी। नशा रहे कि मैं पूर्वज आत्मा हूँ.... मुझे अपनी शुभ–भावनाओं से सबकी पालना करनी है।

२. जिनका सहारा यहां कोई नहीं उनके सहारे तुम हो.... तुम्हारी शुभ भावनाएं अनाथों को सनाथ बनायेगी..... तुम्हारी स्नेह की भावनाएं उन्हें ईश्वरीय स्नेह की अनुभूति करायेगी। तुम्हारी शुभ भावनाएं संसार व यज्ञ के लिये बहुत बड़ा सहयोग है।

३. तुम अपनी शुभ भावनाओं के द्वारा अपने शत्रु को भी मित्र बना सकते हो. ... शुभ भावना वह शस्त्र है जिसका वार कभी खाली नहीं जाता..... परन्तु हमारी शुभ भावना का प्रभाव दूसरों पर उतना ही होता है जितना हमारे अन्दर पवित्रता व योग का बल होगा। नशा हम विश्व कल्याणकारी हैं... ..... हमें सभी को अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स का बल देना है।

४. हमारी शुभ–भावनाएं दूसरों के लिये वरदान बनकर उन्हें नवजीवन प्रदान करती है..... और उनके मन के बोझ को हल्का करती है। इसके साथ हमें दूसरों की शुभ–भावनाएं भी जितनी है..... इसके लिए सभी को सुख देना है व स्वयं में पवित्रता का बल भरना है.... तुम दाता के बच्चे मास्टर दाता हो..... तुम्हें निरन्तर देना है।

५. उस ब्राह्मण का जीवन पूर्ण सफल है जिसने अपने मन को शुभ–भावनाओं का भण्डार बनाया हो। शुभ भावनाएं रखना महान आत्माओं की सुन्दरता है। शुभ भावना उस इन्जैक्शन की तरह है जो सीधा रक्त में जाकर शक्ति प्रदान करता है। और अपना मन शीतल व शान्त रहता है। मैं बाप समान

हूँ..... इस नशे में रहकर सभी को पवित्र वायब्रेशन्स दो।

६. जिसका मन सदा शुभ भावनाओं से भरा है वह चन्द्रमा की तरह इस कलियुगी रात में सभी को शीतलता प्रदान करता है। परन्तु शुभ भावनाओं के बीज उसी के अन्दर अंकुरित होते हैं जिसका मन शुभ चिन्तन से भरा रहता हो। याद रखो दूसरों के प्रति शुभ–भावनाएं रखने से तुम्हारा जीवन निष्कंटक हो जायेगा।

७. जिस कार्य को तन और धन की शक्ति करने में असमर्थ है उस कार्य को तुम्हारी शुभ भावनाएं सरलता से सम्पन्न कर देंगी। अपकारियों पर उपकार करने वाले ही महान होते हैं..... तुम्हारा योगयुक्त रहना ही संसार पर सबसे बड़ा उपकार है।

८. तुम्हारी भयंकर बिमारियों में दूसरों की शुभ भावनाएं दुवाएं बनकर बहुत मदद करती हैं। अपनी सेवाओं व मदद के द्वारा दूसरों की शुभ भावनाओं को जीतो। जो मनुष्य दूसरे के लिए शुभ भावनाएं रखते हैं उन्हें भी आवश्यकता के समय दूसरों की शुभ भावनाओं की मदद मिलती है।

९. आज तुम्हारे सौभाग्य का सितारा चमकाने वह स्वयं आ रहा है जिसके प्यार को तुमने अपने दिल में समाया हुआ है। आज तुम पर उसकी नजरें पड़ेगी जिसकी नजरों में तुम समाये रहते हो। इस मिलन के सुख के लिए आज मुख रूपी बाजे को कम बजायें व सारा दिन पवित्रता के सागर की किरणों के नीचे रहें।

१०. तुम्हारी शुभ भावनाएं अमृत तुल्य हैं..... जो कि तुम्हें शक्तियां प्रदान करती हैं जबकि दुर्भावनाएं वह घातक विष है जो तुम्हारे चित्त में कड़ुवाहट भी पैदा करता है व तुम्हारी शक्तियों को भी नष्ट करता है तथा दूसरों की उन्नति के मार्ग को रोकने लगता है.... अतः अपने शुभ भावनाओं की अमृत वर्षा सभी पर करत रहो।

११. मुश्किल शब्द संकल्प मे भी नहीं लायेंगे– सभी ये व्रत लें। कभी भी हलचल में न आवें, सदा अचल रहें–सभी ये व्रत लें। आप मास्टर सर्वशक्तिमान हो.... यदि आप ही नहीं करोगे तो और कौन करेगा। कुछ

भी हो जाये खुशी को नहीं छोड़ना है..... जब तक जीना है खुश रहना है।

१२. तुम भक्तों के इष्ट देव हो। भक्ति में तुम्हारी जड़ मुर्तियों से सभी को श्रेष्ठ वायब्रेशन्स मिलते हैं। भक्तों के लिये तुम्हारी शुभ भावनाएं वरदान है। अब यदि तुम ही प्यासी आत् को सभी भावनाओं के वायब्रेशन्स न दोगे तो और कौन देगा। सवेरे उठते ही सभी को अपनी शुभ भावनाएं दो कि सभी आत्माओं को सुख–शान्ति प्राप्त हो।

१३. पुण्य आत्माएं वे हैं जिनका मन सभी के प्रति शुभ भावनाओं से भरा है, जिनके मन में उन आत्माओं के प्रति भी अशुभ भाव नहीं उठते जो उनकी अलोचना करते हैं। पुण्यात्मा बनने में बड़ा सुख है। जो आत्मा दूसरों के प्रति शुभ भावना रखती है, उन्हें स्वतः ही सबका सहयोग मिलता है। सभी के प्रति शुभ भावनाएं रखने की लहर फैलाओं।

१४. जिस आत्मा ने दूसरी आत्माओं के लिए शुभ भावनाएं रखना सीख लिया हो, उसने मानो जन्म–जन्म के शीतल संस्कार बनाने की चाबी प्राप्त कर ली है। तुम्हें फरिश्ता बनना है और फरिश्ते विश्व कल्याणकारी होते हैं। दूसरों के प्रति शुभ–भावना रखना माना नैचुरल मनसा सेवा द्वारा विश्व कल्याण करना। अतः अपनी शुभ भावनाओं की शीतल सरिता से इस जलती हुई वसुन्धरा को शीतल करो।

१५. बाबा की सभी आत्माओं के प्रति शुभ भावनाएं रहती हैं कि इनका कल्याण हो... आगे बढ़ें.... इसलिये वे सभी को प्रिय लगते हैं। तुम्हें भी बाप समान बनना है और सभी को शुभ भावनाओं की दुआएं देनी हैं, तब ही तुम सभी को प्रिय लगोगे। याद रहे जब तुम्हारे मन में सभी के प्रति नेचुरल शुभ भावनाएं हो जायेगी तब तुम्हारी सम्पूर्णता समीप आयेगी।

पवित्रता का प्रयोग करो

१. पवित्रता तुम्हारे नयनों का श्रृंगार है। पवित्रता के सागर बाप ने तुम्हें पवित्रता का बल प्रदान किया है.... इस बल से तुम्हें इस वसुधा पर सुख–शान्ति की सरिता बहानी है। तुम्हारे मन में कभी तनिक भी दुख अशान्ति की लहर नहीं होनी चाहिये। तुम्हारे पवित्र नयन जिस पर भी पड़े उसे पवित्रता का बल प्राप्त हो.... यह अभ्यास करो।

२. पवित्रता संसार की सबसे बड़ी शक्ति है। पवित्रता धर्म व राष्ट्र के लिये बल है। जिस धर्म के पास पवित्रता का बल हो वह धर्म उतना ही शक्तिशाली होता है। इसलिये सदा इस नशे में रहो कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। अपने श्रेष्ठ पावन स्वरूप द्वारा विश्व की अनेक आत्माओं को पावन बनने की प्रेरणा दो।

३. तुम सांसारिक मनुष्य नहीं, पवित्रता के फरिश्ते हो..... तुम पर संसार को बदलने की जिम्मेवारी है। अपनी जिम्मेदारियों को भूलो नहीं। अपनी जिम्मेदारियों को भूलकर अलबेलेपन की गहरी निंद्रा में सोना तुम्हें नहीं शोभता। याद रहे तुम्हारी पवित्रता समस्त विश्व के लिये वरदान सिद्ध होगी। अपने इस वरदान को नेचुरल बनाकर जग–कल्याण करो।

४. तुम इस धरा पर पवित्रता के सूर्य हो..... तुम्हारा प्रकाश सभी धर्मों को प्रकाशित कर रहा है। उस पर किसी भी दूषित वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ सकता। तुम्हारे पवित्र वायब्रेशन्स वातावरण को भी शुद्ध कर देते हैं। अपने इस स्वमान में रहो तुम्हारा प्रभाव अनेक आत्माओं को पवित्र वायब्रेशन्स की अनुभूति करायेगा।

५. पवित्र आत्माएं इस सृष्टि के लिये रोशनी हैं..... पवित्र आत्मा अपनी संकल्प शक्ति से जो चाहे कर सकती है तुम्हें सम्पूर्ण पवित्रता का बल स्वयं में भरना है। इसके लिये अशरीरी होने का बार–बार अभ्यास करो। अशरीरी होने से ही तुम्हारे कर्मेन्द्रियां शीतल होंगी और स्वयं की या अन्य की देह तुम्हे आकर्षित नहीं करेगी। याद रहे पवित्रता ईश्वरीय गिफ्ट है तुम इसकी रक्षा करोगे तो ये तुम्हारी रक्षा करेगी।

६. तुमने भगवान से सम्पूर्ण पवित्रता की प्रतिज्ञा की है, तुमने उसे वचन दिया है और भगवान को वचन देकर निभाना तुम्हारा परम कर्तव्य है। अगर तुम अपने वचन से पीछे हटे तो मानो तुमने भगवान से धोखा किया और परिणाम स्वरूप पूरे कल्प में कोई भी तुम पर विश्वास नहीं करेगा। इसलिये अपनी प्रतिज्ञा पर इतने दृढ़ हो जाओ कि आपकी दृढ़ता के सम्मुख माया को शीश झुकाना पड़े।

७. तुम पवित्र आत्माएं भगवान के नयनों का श्रृंगार हो..... तुम पर भगवान की नजर है। जिस पर भगवान की नजर हो, उसकी नजर किसी भी

देहधारियों पर जा नहीं सकती। यदि तुम्हारी नजरें देहधारियों पर जाती हैं तो तुम्हारी सुक्ष्म शक्तियां नष्ट होती हैं। याद रहे जिनकी दृष्टि में केवल एक बाप ही बसा हो, उनकी दृष्टि से सभी को बाप का साक्षात्कार होगा और उनकी पवित्रता का बल अनेकों को निरोगी बनायेगा।

८. सम्पूर्ण पवित्र आत्माएं ही अष्ट रत्न बनती हैं, जिन्होंने मन, वचन व कर्म की सम्पूर्ण पवित्रता धारण की होगी वही बाप को प्रयत्क्ष करने के निमित्त बनेंगे। तुम्हारी पवित्रता तुम्हे महानता के पथ पर ले चलेगी.... सदा ये नशा रहे कि मैं वही पवित्र आत्मा हूँ जिनकी पूजा मन्दिरों में हो रही है, जिससे भक्तों को पबित्र वायब्रेशन्स मिल रहे हैं। सदा अपने सिर पर पवित्रता का ताज देखते रहो।

९. सम्पूर्ण पवित्रता तुम्हारी वो मंजिल है, जिस पर चढ़कर तुम्हें सारे तत्वों को पावन दृष्टि देनी है। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् माया की सम्पूर्ण अविद्या। कामजीत अर्थात् कामना जीत और क्रोध जीत। जिसका चित पूर्णतया शीतल हो गया हो, जिसकी बुद्धि पूर्णताया शीतल हो गई हो.... जिसके संस्कार निर्मल हो गये हों, वहीं सम्पूर्ण पवित्र आत्मा है। ऐसी पवित्र आत्मा धर्म को विशेष बल प्रदान करती है।

१०. सम्पूर्ण पवित्र बनने के लिये भाई–भाई की दृष्टि का इतना अभ्यास करो कि वह आत्मा नैचुरल हो जाए। यह देह जरा भी आकर्षित न करें। सम्पूर्ण पवित्रता में साधारण संकल्पों व **साधारण संकल्पों** से भी परे हो जाती है। मैं परम पवित्र आत्मा हूँ–इस नशे में रहकर पवित्रता का सुख प्राप्त करें व दिव्यता धारण करें।

११. पवित्रता के सागर बाप ने तुम्हें पवित्रता की गिफ्ट दी है। तुम्हें पतिव्रता बनना है अर्थात् तुम्हारी बुद्धि एक के सिवाय अन्य कहीं भी आकर्षित नहीं होनी चाहिये। ऐसी पवित्र आत्माएं जो पवित्रता के खजाने से भरपूर होगी, इस कलियुगी रात में पूर्णिमा की तरह चमकेगी। इसलिये सदा नशा रहे कि पवित्रता मेरा सच्चा धर्म है, मैं किसी भी कीमत पर ये धर्म नहीं छोड़ सकता।

१२. तुम पवित्रता के सूर्य हो। तुम्हारा तेज भूमण्डल पर फैल रहा है। तुम्हारी तेजस्वी किरणों से माया की दुर्गन्ध नष्ट हो रही है। तुम्हारी पवित्रता ही

इस जग को फूलों का गुलशन बनायेगी। इसलिये तुम्हारे अन्दर काम की सूक्ष्म कामना व क्रोध का अंश नहीं होना चाहिये। ये सूक्ष्म कामनाएं तुम्हारी सूक्ष्म शक्तियों को नष्ट करती है। योगबल से सभी अपवित्र संस्कारों को मूल से नष्ट कर दो।

१३. तुम्हें इस धरा पर पवित्रता की गंगा बहानी है। तुम्हारे पवित्रता की अमृतधारा से लोग अमरत्व का वरदान प्राप्त करेंगे। इसलिये तुम्हें अपवित्र संकल्पों से दूर सदा पवित्रता के कवच के अन्दर रहना है। याद रहे तुमने ये पवित्रता का पथ स्वइच्छा से चुना है। इस पर आने वाले कांटे तुम्हारे उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे। इस मार्ग में जो भी कष्ट आयें, वे तुम्हारी दृढ़ता को और मजबूत करें, तुम्हारे विश्वास को और बढ़ायें।

१४. तुम्हें स्वयं को बाप समान पवित्र बनाना है..... अपनी दृष्टि में पवित्रता का इतना बल भरो कि जिस पर भी तुम्हारी दृष्टि पड़े वह देह भान भूल जाये। उसकी वृत्ति शुद्ध हो जाये और उसे अपने मूल–निर्विकारी स्वरूप की स्मृति आ जाये। याद रहे पवित्र आत्मा बाबा से उसी तरह बात कर सकती है जैसे वायरलैस से बात की जाए। इसलिये सदा नशा रहे कि मुझे पवित्रता के बल से अनेक आत्माओं को सहारा देना है।

१५. पवित्रता सुख शान्ति की जननी है। जहां पवित्रता है वहां सुख–शान्ति स्वतः ही आ जाते हैं। पवित्रता ही रूहानियत व योग का आधार है..... इसके बल से ही बुद्धि एकाग्र हो जाती है। तुम्हें स्वयं में पवित्रता की शक्ति भरकर सम्पूर्ण विश्व को पवित्रता का दान देना है.... इसलिये तुम्हारे पास नाम मात्र भी अपवित्रता नहीं होनी चाहिये। नशा रहे कि भगवान मेरा प्रियतम है; मैंने अपना दिल उस पर बलिहार किया है।

निरंहकारिता के प्रयोगी बनो

१. सम्पूर्ण निरंहकारिता निर्विकारी स्थिति का प्रतीक है..... निरंहकारी स्थिति चित्त को शीतल व बुद्धि को दिव्य बनाती है जबकि अहं विष के समान है जो कि सभी सद्गुणों को भी जहरीला कर देता है। निरंहकारिता महापुरुषों की शोभा है। कौन कितना महान है यह उसकी निर्माण स्थिति से ही पहचाना जा सकता है। इसलिये तुम्हें नशा रहे कि हमारे बापदादा सम्पूर्ण निरंहकारी हैं हमें भीं उन जैसा बनना है।

२. शिवबाबा बुद्धि दाता है और ब्रह्मा बाबा इस सृष्टि में सबसे अधिक बुद्धिमान। परन्तु दोनो को ही जरा भी अहंकार नहीं, शिवबाबा कहते हैं – सब कुछ ड्रामा अनुसार होता है और ब्रह्मा बाबा कहते है – सब कुछ शिवबाबा करता है। ऐसे ही तुम्हें भी बुद्धि का जरा भी अभिमान नहीं होना चाहिये, बुद्धि का अभिमान टकराव पैदा करके जीवन को कटु बना देता है। इसलिए याद रहे हमारी बुद्धि, शिवबाबा द्वारा मिली गिफ्ट है।

३. आज तुम्हारे मन का मीत तुम्हारी प्रीत का फल देने आ रहा है। आज तुम उसके प्रेम में इतने मग्न रहो कि वह खिंचा हुआ नीचे चला आये। तुम्हारा विशुद्ध प्रेम इस महामिलन को आनन्दकारी बनाने वाला है। आज इस मिलन के सुख के लिये मौन रहें व अनुभव करें कि हम निरन्तर परम पवित्र बाप के फाउन्टेन के नीचे हैं।

४. तुम सन्तुष्ट मणी हो। सन्तुष्टता तुम्हारा निजी स्वमान है। तुम्हारे वायब्रेशन्स, असन्तुष्ट आत्मा को भी सन्तुष्ट बना देगें। कभी भी परिस्थिति आये तो समझो बेहद की स्क्रीम पर कार्टून शो चल रहा है। संगम युग की श्रेष्ठ शान है–"मैं सन्तुष्ट आत्मा हूँ.... मणी हूँ" इस विशेषता को इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। तुम परमात्म अधिकारी हो, तुमने आलमाईटी अथॉर्टी पर भी अधिकार कर लिया है, बीज पर ही अधिकार कर लिया है। समय पर वरदानों को स्मृति में रखकर काम में लगाओ तो वरदान अपना श्रेष्ठ स्वरूप दिखाता रहेगा।

५. जो स्वयं निर्मान है वे स्वर्ग के निर्माण के कार्य में मुख्य भूमिका निभाते हैं। अंहकार मनुष्य को अन्धकार के गर्त में ढकेल देता है। अहंकारी उस सूखे पेड़ की तरह है जो न तो झुकता है और न किसी को छाया देता है। इसलिये, इस रूहानी पथ पर अहंकार को अपना शत्रु जान इसे मूलतः नष्ट कर दो, तब तुम्हारा जीवन दिव्यता से चमक उठेगा और तुम्हारी महानता के समक्ष कोटि–कोटि शीश झुक एक साथ जायेंगे।

६. अहंकारी मनुष्य को स्वप्न में भी सुख–शान्ति प्राप्त नहीं होती..... योगियों के जीवन में अहंकार का कोई स्थान नहीं। यदि तुम्हें धन का या बल का अभिमान है तो यह तुम्हारी बड़ी भूल है क्योंकि जिसका तुम अभिमान

करोगे वह तुम्हें छोड़ जायेगा.... और तुम्हारा अभिमान तुम्हारे लिये अपमान के बीज डाल देगा। इसलिये याद रखो यदि तुम भगवान के समीप जाना चाहते हो तो उसी के समान निरहंकारी बन जाओ।

७. अहंकारी मनुष्य का ज़ीवन उस सूखे पेड़ की तरह है जो सदा अकड़ा खड़ा रहता है, जो कभी भी झुकता नहीं और यदि उसे झुकाया जाये तो वह टूट जाता है। अहंकारी के जीवन में सद्गुणों की सुगन्ध नहीं होती, उससे सभी दूर दूर रहते हैं, फलस्वरूप समय पर कोई भी उसे सहयोग नहीं देता। इसलिये याद रखो–महान योगी बनना है.... यदि बुद्धि को दिव्य बनाना है तो निरहंकारी बनो।

८. अहंकारी मनुष्य का मन सदा ही तेरी मेरी में उलझा रहता है.... वह स्वयं तो सभी से सम्मान चाहता है, परन्तु, कभी भी दूसरों की बात का आदर नहीं करता। उसे सूक्ष्म में रहता है कि मुझ जैसा बुद्धिमान अन्य कोई नहीं, मैं ही ठीक हूँ दूसरे गलत है..... इसलिये यदि बाप के दिल तख्त पर चढ़ना चाहते हो तो अपने अभिमान को सूक्ष्मता से पहचान कर इसे त्याग करो और सभी को दिल से सम्मान दो।

९. "मैं करता हूँ..... ये संकल्प सच्चे योगियों की पहचान नहीं। "मैं पन का त्याग" उन्नति का द्वारा खोलता है। ये "मैं पन" ही व्यर्थ का कारण बनता है व जीवन में अशान्ति के बीज बोता है। बाबा की शक्तियों द्वारा ही यह महान कार्य सम्पन्न होता है... ये अनुभव योगियों को "मैं पन" से मुक्त कर देता है। अपने सम्पूर्ण लक्ष्य को पाने के लिये अहंकार को पहचान कर नष्ट करना आवश्यक है। याद रहे तुम्हें विश्व में सत्य का प्रकाश फैलाना है..... इसलिये अहंकार के अन्धकार को अपने मन में प्रवेश न होने दें।

१०. अहंकार क्रोध को जन्म देता है और क्रोध से विवेक नष्ट हो जाता है, विवेक नष्ट होने से मनुष्य पाप कर्मों मे प्रवृत्त होता है। फलस्वरूप उसका पतन हो जाता है इसलिये स्वमान की शीतलता से अहंकार की अग्नि को नष्ट करो। अहंकार तुम्हें अलंकारहीन बनाकर तुम्हारे सभी सद्गुणों को कब्र में दाखिल कर देता है। याद रहे–बापदादा को वो ही रुहें प्रिय है जो निरहंकारी हैं व अपनी प्राप्तियों व गुणों को ईश्वरीय देन मानती हैं।

११. शिवबाबा के बच्चे बन जाओ तो अनेक झंझटों से बच जाओगे..... तुम्हें ऐसा छोटा बच्चा बनना हे जिसमें अहं का नाम निशान न हो, तुम्हें ऐसा छोटा बच्चा बनना है जो नम्र हो व सरलचित हो और चिन्ताओं से मुक्त हो। अहंकार उन महान आत्माओं को शोभा नहीं देता, जिन्हें भगवान ने विश्व कल्याण का कार्य सौंपा हो। इसलिये याद रखो..... तुम अहंकार को छोड़कर नम्रता व निर्मित्त भाव को धारण करेंगे तो स्थापना का वह कार्य शीघ्र ही सम्पन्न होगा।

१२. अहंकार पतन का मार्ग है। मनुष्य जिस भी प्राप्ति का अभिमान करेगा, वह सदा तो उसके पास नहीं रहेगी। अभिमानी व्यक्ति को अन्ततः नीचा ही देखना पड़ता है। तुम तो महान हो, तुम्हे तो सभी के अहंकार मिटाने है, तुम्हें तो वसुन्धरा पर सुख–चैन का साम्राज्य स्थापित करना है, तुम अहं के वशीभूत नहीं हो सकते। कभी न भूलना–जहां अहंकार है–वहां बुद्धि की दिव्यता नहीं, फलस्वरूप वहां ईश्वरीय मिलन का आनन्द नहीं।

१३. अहंकारी मनुष्य का चित्त कभी भी स्थिर नहीं होता। वह सदा ही अपनी महिमा गाता है। जब कि नम्र व्यक्ति प्रभु गुण गाता है। अहंकारी मनुष्य स्वयं को पूर्ण ज्ञानी समझता है, जब कि यही उसका अज्ञान हैं। अहंकारी के ज़ीवन में दैवी गुणों की सुगन्ध नहीं होती। इसलिये हे विश्व में रुहानियत की लहर फैलाने वाले योगियों तुम जितने बड़े बनते जाओ उनते ही नम्र बनो। अहंकार तुम्हारे किसी भी अंग को छू न सके।

१४. आज महा मिलन का दिन है..... महाज्योति हम सभी ज्योतियों से मिलने आ रही है। इस अलौकिक मिलन के सुखद अनुभव के लिये आज सारा दिन मौन रहे वं सवेरे से इस नशे में रहें कि हम इस संसार में सबसे अधिक भाग्यशाली हैं और सारा दिन ईश्वरीय प्यार में मग्न रहें ताकि बाबा को भी बच्चों को देखकर अपार हर्ष हो। आज सारा दिन बाबा की दिव्य किरणों के नीचे स्वयं को अनुभव करें।

१५. अहंकारी मनुष्य सदा मैं मैं करता है.... यह मैं मैं ही उसे निर्बल करता है और स्वमान से दूर ले चलता है.... एक दिन आता है जबकि वह इस संसार में अकेला ही रह जाता है और उसका अन्त भी बड़ा ही दुखदाई

होता है..... इसलिये इस रुहानियत के मार्ग पर उन्नति के लिये "मैं पन" को समूल नष्ट करना आवश्यक है... जो ईश्वरीय कार्य में रात दिन सहयोग देकर "मैं पन" नहीं छोड़ता उन्हें सेवा का बल नहीं मिलता।

स्वमान के प्रयोगी बनो.....

१. जितनी ऊंची नजर से तुम्हें भगवान देखता है उतनी ही ऊंची नजर से तुम भी स्वयं को देखो इसे कहते हैं स्वमान की स्थिति। स्वयं को स्वयं ही मान देते हुए सुक्ष्म नशे में स्थित हो जाओ। सच्चे दिल से स्वीकार कर लो कि मैं वही हूँ जो मुझे बापदादा टाईटल देते हैं। यह स्वमान की स्थिति तुम्हारे विचारों को महान बनाकर तुम्हारे मन में महान विचारों को उदय करेगी और तुम बाप समान बन जाओगे।

२. स्वमान अर्थात् ये जानते चलो कि "मैं कौन हूँ" मेरा महत्व क्या है, मेरी शक्ति क्या है व मेरी जिम्मेदारियां क्या हैं? जैसे–जैसे आप स्वयं के यथार्थ मूल्य को जानते जायेंगे, स्थिति अडोल होती जायेगी। "मैं विश्व की पूर्वज आत्मा हूँ.... आज इस स्मृति व नशे में रहो और अपने इस स्वमान में रहकर विश्व की आत्माओं की पालना करो क्योंकि पूर्वज का अर्थ है पालनहार। ये स्वमान तुममें परिपक्वता लायेगा।

३. स्वमान की स्थिति हो जाना ही सम्पूर्णता है..... तुम स्वमान में रहो तो सारा संसार तुम्हें मान देने के लिये उसी तरह दौड़गा जैसे देवियों के मन्दिरों में भक्त दौड़ते हैं। मान स्वमान की परछाई है। आज इस स्वमान में रहो कि मैं "पवित्रता का फरिश्ता हूँ" इस टाईटल को सच्चे दिल से स्वीकार कर लो और चिन्तन करो कि मेरा इस धरा पर अवतरण हुआ ही है पवित्र दुनिया की स्थापना के लिये। इसलिये मुझे अपनी दृष्टि से पवित्रता का वरदान सभी को देना है।

४. जितना जितना स्वमान श्रेष्ठ होता जाता है, अभिमान स्वतः ही नष्ट होता जाता है। हमारे स्वमान के वायब्रेशन्स हमारे लिये व दूसरों के लिये छत्रछाया का काम करते हैं। इस छत्रछाया में सभी सुरक्षित हो जाते हैं। "मैं मास्टर सर्वशक्तिान हूँ" इस सत्य को स्वीकार कर लो। सदा अपने इस टाईटल के नशे में रहो, तो तुम जैसा शक्तिशाली और कोई नहीं होगा।

माया दूर से ही तुम्हें नमस्कार करेगी व तुम अपनी संकल्प शक्ति से जो चाहोंगे कर सकोगे।

५. स्वमान बुद्धि को एकाग्र करके हमारे योग को सहज कर देता है। जो आत्मा स्वमान में स्थित है उसके सम्मुख आने से दूसरों के अभिमान नष्ट हो जाते हैं। स्वमान में लम्बा समय स्थित होकर ही हम जान सकते हें कि मैं कौन हूँ.... "मैं विश्व कल्याणकारी आत्मा हूँ– स्वयं को इस सूक्ष्म नशे व स्मृति में स्थित करो। और विचार करो हम विश्व कल्याणकारी हैं तो हमारे मन में किसी के लिये भी घृणा या ईर्ष्या पैदा नहीं हो सकती, हम किसी के लिये भी अशुभ भावना नहीं रख सकते।

६. अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होकर आप जिसके भी सम्मुख ज्ञान सुनाने जायेंगे उस पर भी अमिट छाप पड़ेगी। तुम्हारा दिनों दिन सूक्ष्म चले तब इससे संस्कार दिव्य बनेंगे। "मैं शान्ति का अवतार हूँ, पीस हाऊस हूँ। मैंने बाबा के साथ इस धरा पर शान्ति स्थापना अर्थ अवतार लिया है, इसलिये न मैं किसी के मन को अशान्त कर सकता और न ही किसी अशान्त वातावरण का प्रभाव मुझ पर पड़ सकता।

७. तुम इस जहान के नूर हो, तुम भगवान के नयनों के नूर हो। ये जहान तुम्हारी रोशनी से रोशन है। यदि तुम पवित्र आत्माएं यहां न हों, तो ये जहान विरान बन जायें.... इतना महत्व है तुम्हारा इसलिये सदा जहान को प्रकाश देते रहो। विश्व को प्रकाश देने वाले कभी अन्धकार में नहीं भटक सकते। तुम्हारा ये स्वमान तुम्हारे मन को प्रकाशित करके जीवन को आलोकित करेगा और विचारों को महान बनायेगा।

८. "मैं विघ्न विनाशक आत्मा हूँ" इस स्मृति में रहने से तुम्हारा जीवन विघ्न मुक्त होता जायेगा। चिन्तन करो–मन्दिरों में तुम्हारी मूर्तियों के दर्शन मात्र से ही भक्तों के विघ्न नष्ट हो जाते हैं तो भला तुम विघ्नों के चक्रव्यूह में कैसे फंस सकते हो इस स्वमान में लम्बा समय स्थित रहने वाली आत्मा अपनी दृष्टि से दूसरों को भी विघ्न मुक्त बना सकेगी। इसलिये यह सूक्ष्म नशा रहे कि मुझे अपने वायब्रेशन्स से अनेकों के विघ्न

नष्ट करने हैं।

६. "मैं विजयी रत्न हूँ" यह स्वमान तुम्हें सर्वदा विजय का तिलक लगायेगा। जिस आत्मा ने स्वीकार कर लिया हो कि मैं विजयी हूँ वह अवश्य ही विजय माला का दाना बन भक्तों के स्मरण योग्य बन जायेगा। अपने चित्त में समा लो कि भगवान ने मुझे विजयी रत्न कहा है... सो स्वप्न में भी मेरी हार नहीं हो सकती। मेरी विजय का झण्डा स्वयं भगवान ने पहले से ही लहरा दिया है। कल्प–कल्प मेरी माया पर जीत हुई है, अब भी जीत निश्चित है।

१०. मैं हाईएस्ट (महान) व होलीएस्ट आत्मा हूँ, जब तुम इस स्वमान में प्रत्यक्ष रूप से रहने लगोगे तो बाबा की प्रत्यक्षता की पताका सम्पूर्ण विश्व में लहराने लगेगी। जैसा आप स्वयं को मानोगे वैसे ही तुम बन जाओगे। सोचो..... जो सर्व महान है उनके संकल्प, बोल व कर्म कितने महान होने चाहिये। जो परमपवित्र हैं उन्हें देखते ही दूसरों के मन के वायब्रेशन्स भी पवित्र हो जाते हैं। सदा स्वयं को इस सूक्ष्म नशे में स्थित करो तो स्थिति न्यारी व अडोल बन जायेगी।

११. 'तुम जहान के नूर हो' तुमसे ही ये जग रोशन है। यदि इस जहान में तुम न हो तो ये जहान अन्धकारमय हो जाये, ये जग वीरान हो जाये, यहां मानवता लोप हो जाये। क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारा इतना महत्व है? तुमसे चहुँ और प्रकाश फैलता है.... किसी भी तरह के अन्धकार को मन में प्रवेश न होने देना। तब तुम चमकते हुए नूरे जहान को देख कर अनेकों के नूर चमक उठेंगे और इस धरा से सदा के लिये अन्धकार विलीन हो जायेगा।

१२. "मै राजऋषि हूँ"–इसलिये मेरी बुद्धि इस संसार के वैभवों में लिप्त नहीं हो सकती। मैं वह ऋषि हूँ जिसकी उपस्थिति ही इस संसार के लिये वरदान है। इसलिये मेरी बुद्धि कभी भी विचलित नहीं हो सकती। तुम स्वर्ग का राज्य पाने के लिये तपस्या कर रहे हो, स्वर्ग का राज्य राजऋषियों का अधिकार है तुम्हें भगवान स्वयं राजतिलक देने आयें हैं यह स्मृति व नशा तुम्हारे संस्कारों को रॉयल बनायेगा।

योग के प्रयोगी बनो

१. जिस योग का अभ्यास तुम करते हो, वह अनन्त शक्तियां प्रदान करने वाला है, इस योग अभ्यास से तुम भगवान के अति समीप जाकर उससे मन चाहे वरदान प्राप्त कर सकते हो। योग द्वारा ही स्वयं को ईश्वरीय प्यार से आनन्दित कर सकते हो। अभ्यास करो कि "मैं इस देह में अवतरित आत्मा हूँ" मैंने परमधाम से आकर इस देह में प्रवेश किया है। मैंने अवतार लिया ही है इस विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिये। इस प्रकार स्वयं को इस देह से न्यारा अनुभव करो।

२. योग बल से तुम कर्मेन्द्रियों को वश में कर के कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकते हो। योगबल विश्व में सबसे बड़ा बल है। इस आनन्द के बाद संसार के सभी आनन्द फीके पड़ जाते हैं। मैं आत्मा राजा, भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ, मैं इस देह व कर्मेन्द्रियों का मालिक हूँ, इस मालिक पन के नशे को बढ़ाओ और अभ्यास करो कि मुझे एक ओर से ब्रह्मा मां शीतलता की किरणे दे रही है व दूसरी ओर से ज्ञान–सूर्य बाप शक्तियों की किरणे दे रहे हैं।

३. योगबल में तुम्हें स्वर्ग की बादशाही का राजतिलक मिल सकता है। ये ही वो राजयोग है जो तुम्हारी खोई हुई शक्तियां तुम्हें प्राप्त कराता है। योग में एकाग्रता के द्वारा तुम सर्व सिद्धियों के स्वामी बन सकते हो..... मैं सर्वशक्तिवान की छत्रछाया के नीचे हूँ..... मेरा छत्र स्वयं भगवान है। इस स्थिति का अभ्यास करें और चिंतन करें कि इस छत्रछाया में मैं पूर्ण सुरक्षित हूँ और मुझे कोई भय नही हो सकता।

४. योगबल से तुम इस धरा पर स्वर्ग के दैवी स्वराज्य की स्थापना करते हो। योग तुम्हें अनन्त शक्तियां प्रदान करता है। जिनसे तुम स्वयं को व अनेक आत्माओं को विघ्न–मुक्त बना सकते हो और जीवन को पूर्ण सुखी कर सकते हो। मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ.....और सर्वशक्तिमान बाबा से सर्व शक्तियों की रंग बिरंगी किरणें मुझ पर उतर रही हैं..... ये अभ्यास करते रहो कि मैं बाबा की सर्वशक्तियों से जुड़ा हूँ, निरन्तर इस फाउन्टेन के नीचे हूँ।

५. योग का रस संसार को भुला देता है और संस्कारों को दिव्य बना देता है। योगबल बढ़ाते चलो तो सर्व कर्मन्द्रियों के रस स्वतः ही छूट जायेंगे और स्थिति एकरस हो जायेगी। आंखों से दिव्य जयोति ही देखो और अभ्यास करो कि मैं आत्मा शान्ति की अवतार हूँ और शान्ति के सागर बाप से शान्ति की किरणें निरन्तर मुझे प्राप्त हो रही हैं और मुझसे चारों ओर फैल रही हैं।

६. योग अभ्यास से आत्मा सम्पूर्ण पावन बनकर चमकता हुआ सितारा बन जाती हैं। योग की शक्ति के समक्ष सभी आसुरी शक्तियां निर्बल हो जाती है। योग हमें अपनी शक्तियों की पहचान कराता है। अपने सम्पूर्ण स्वरूप को अपने सामने इमर्ज करो। स्वयं को इस नशे में स्थित करो कि यह मेरा ही सम्पूर्ण स्वरूप है अपने सम्पूर्ण स्वरूप का चिन्तन करो तो सम्पूर्णता के अनुभव होंगे।

७. योग सर्वश्रेष्ठ औषधी है। इससे तुम अपने तन को भी स्वस्थ कर सकते हो व व्याधियों को सहन करने की शक्ति भी एकत्रित कर सकते हो। योग के पवित्र वायब्रेशन्स ही शरीर की अशुद्धियों को नष्ट करने में सक्षम है। "मैं प्रकृति का मालिक हूँ।" मुझ पर बाबा से पवित्रता की किरणें पड़ रही है। मेरे चारो और पांच तत्व राजा रूप में खड़े हैं। मैं उन्हें पवित्र वायब्रेशन्स देकर पावन बना रहा हूँ। तुम इस प्रकार प्रकृति की सेवा करो तो प्रकृति तुम्हें सर्वस्व प्रदान करेगी।

८. योगी स्वयं में इतने आनन्दित व सन्तुष्ट होते हैं कि उनकी बुद्धि इस संसार के किसी भी वैभव या व्यक्ति की ओर आकृष्ट नहीं होती। तुम महान योगी बनो। इसी में तुम्हारे त्याग व वैराग्य की शोभा है। 'शिव बाबा ज्ञान सूर्य है' आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर, परमधाम में ज्ञान सूर्य की किरणों के नीचे स्थित हो जाएं। ज्ञान सूर्य की सर्व गुणों व शक्तियों की किरणें आप पर पड़ेगी और आप मास्टर ज्ञान सूर्य बन जायेंगे।

९. योग–बल से तुम्हारी स्थिति अडोल होती है तथा सारी ही कारोबार हल्की होती जाती है। जितना योग श्रेष्ठ होगा, उतना ही सफलता सहज होगी। योगी सर्व का सर्व योगी के सहयोगी होते हैं। मैं इस देह में अवतरित

फरिश्ता हूँ। स्वयं को इस स्थिति में स्थित करो। सोचो मेरा इस देह में अवतरण यहां पवित्रता, सुख–शान्ति के राज्य की स्थापना के लिये ही हुआ है।

१०. योगबल से तुम अपने व दूसरों के जन्म–जन्म के विकर्म विनाश कर सकते हो। योग–अभ्यास से विकर्म विनाश कर सकते हो। योग अभ्यास के द्वारा मनुष्य पुण्यों की ओर बढ़ता है व पापकर्म होने बन्द हो जाते हैं। वास्तव में योग ही सर्व सुखों का आधार है। "मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ..... " इस नशे में रहकर एक बार फिर से पूरे चक्र में घूम जाओ। महसूस करो कि आप स्वर्ग में देवता हो, देखो आप एक शरीर छोड़कर दूसरा ले रहे हो.... इस प्रकार सहज अशरीरीपन का अनुभव होगा।

११. 'योग अर्थात् भगवान के माथ रहना'– कितना सुख है ईश्वर मिलन में। तुम बुद्धिमान हो, तुम ही यदि निरन्तर ईश्वरीय मिलन में नहीं रहोगे, तो कौन रहेगा? आनी बुद्धि चारों और से समेट लो और एक में मग्न हो जाओ। "मैं एक परम पवित्र आत्मा हूँ", शिवबाबा पवित्रता के सागर हैं। बाबा से पवित्रता की किरणें मुझे प्राप्त हो रही हैं और मुझसे निकलकर अनेक कमजोर आत्माओं को जा रही हैं इस तरह निर्बल आत्माओं को अपनी पवित्रता का बल दो।

१२. सच्चे योगी वे जिनकी बुद्धि रूपी आंख कहीं भी न जाए। ऐसे स्थिर चित्त व अन्तर्मुखता की गुफा में बैठकर तपस्या करने वाले योगी इस विश्व के लिये सहारे बन जाते हैं..... उनसे समस्त विश्व को प्रेरणा प्राप्त होती है। वे स्थापना के कार्य में मुख्य पाट अदा करते हैं। रुहानी ड्रिल का अभ्यास करते हुए परमधाम में बाबा के पास बैठ जाओ और बाप के सभी गुणों का अनुभव करो। बाप का यह साथ तुम्हें बाप समान स्थिति में स्थित करेगा।

१३. जो बच्चे सच्चे योगी हैं, वे ही मेरे सबसे अधिक मद्दगार हैं– भगवानुवाच। क्योंकि उनके योग से सम्पूर्ण विश्व में पवित्रता, शांन्ति व शक्तियों के वायब्रेशन्स फैलते हैं, वतावरण शुद्ध होता है... जिस कारण अनेकों का खिचाव रुहानियत की ओर होता है। अनुभव करो कि मैं फरिश्ता बनकर विश्व के गोले के ऊपर बैठा हूँ। बाबा से किरणें मेरे ऊपर पड़ रही हैं ओर

मुझसे सम्पूर्ण विश्व में फैल रही हैं। इस अभ्यास से तुम्हें दानी महादानी का अनुभव प्राप्त होगा।

१४. तुम्हारी योगयुक्त स्थिति इस संसार के लिये एक वरदान है। तुम्हारा योग अनेक निर्बल आत्माओं को वरदान देता रहेगा। निरन्तर योग की स्थिति ही तुम्हें सम्पूर्णता के पथ पर ले चलेगी और निरन्तर अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करायेगी। मैं आत्मा शिव बाबा से जुड़ी हूँ ओर सम्पूर्ण विश्व मुझ से जुड़ा है। बाबा से पवित्रता की किरणें मुझे प्राप्त हो रही है और मुझे से समस्त विश्व को जा रही है.... इसका अभ्यास करो।

"धारणाओं के प्रयोगी बनो"

१. योगी आत्मा का लक्षण है न्यारे व प्यारे बनना। इस विश्व में रहते हुए विश्व के प्रभाव से न्यारे, इसे देह में रहते के आकर्षण से न्यारे वे संगठन में रहते हुए भी प्यारे। "परन्तु न्यारेपन का अर्थ देह के सम्बन्धियों से अलग होना नहीं है। जो इस तरह न्यारे बनने में नम्बरवन होंगे वहीं विश्व के प्यारे बनने में भी नम्बरवन होंगे। हे महान आत्माओं–सारा संसार तुम्हें न्यारी व प्यारी स्थिति में देखना चाहता है।

२. अन्तर्मुखता योगियों की वह गुफा है जिसमें बैठकर योगी तपस्या कर सकता है। जो अन्तर्मुखी है, वहीं समझदार माना जाता है। जो बाह्यमुखी है उनकी शक्तियां नष्ट हो जाती हैं, उनकी कर्मेन्द्रियां भी बाह्यमुखी हो जाती है। अन्दर में जो आत्मा है, उसमें स्थित हो जाना ही सच्ची अन्तर्मुखता है। अन्तर्मुखी व्यक्ति ही महान चिन्तन कर सकता है। जो अन्तर्मुखी है, वहीं एकान्त का रस ले सकता है। इसलिये मुख रूपी बाजे को अपने कन्ट्रोल में रखो। बोलो तो ऐस बोलो मानो मुख से अमृत बरस रहा हो।

३. हमें देह से न्यारे बनने का अभ्यास करना है, न कि किसी के प्यारे बनने का। जो किसी के प्यारे बनने का पुरुषार्थ करते हैं वही ओर ही दूर हो जाते हैं, क्योंकि प्यारे बनने के लिये अपने स्वमान से नीचे उतरना पड़ता

है। न्यारापन ही हमारी अलौकिकता ही है.... न्यारेपन से ही योगयुक्त स्थिति बनती है। तो हमारे बोल वैसे न हो जैसे सांसारिक मनुष्य बोलते हैं, हमारे संकल्प व कर्म भी वैसे न हो जैसे मनुष्य करते हैं। ये है न्यारापन।

४. स्नेह दो और न्यारे हो जाओ, सहयोग दो और न्यारे हो जाओ अर्थात् रिटर्न में कुछ भी कामना ना करो, न स्वीकार करो तो बाप के प्यारे बन जायेंगे। न्यारापन ही प्यार के सागर का प्यार पाने का पात्र बनाया है। जहां न्यारापन है, वहां लगाव नहीं होता और साधक निर्विघ्न रूप से अपनी मंजिल की ओर चलता है। न्यारेपन की ओर चलता है। न्यारेपन के स्थान पर जब अपनी सेवाओं से भी लगाव हो जाता है तो संगठन में टकराव प्रारम्भ हो जाता है। इसलिये सबसे न्यारे निराले बनो।

५. न्यारी वस्तु सभी को प्यारी लगती है। आपकी न्यारी स्थिति सभी को प्यारी लगेगी। न्यारे बनने के बाद सभी का प्यार स्वतः ही प्राप्त होगा और प्यार की प्यास सदा के लिये समाप्त हो जायेगी। सेवा करके न्यारे हो जाओ, दान देकर भूल जाओ, इससे ही बल प्राप्त होता है। ब्रह्मा बाबा का न्यारापन हम सबके लिये उदाहरण है। उन्होंने सब कुछ किया परन्तु कहीं भी आसक्त नहीं हुए।

६. स्वयं को इस देह में व दुनिया में मेहमान समझो। महसूस करो कि मैं आत्मा मेहमान बनकर इस शरीर में आई हूँ। इससे स्थिति न्यारी व प्यारी रहेगी। जैसे मेहमान का कहीं लगाव नहीं होता वह सभी को प्रिय लगता है, इसी प्रकार स्वयं को मेहमान समझने से कहीं भी लगाव नहीं होगा ओर सभी को प्यारे भी लगेंगे। सदा अभ्यास हो कि हम इस विशाल विश्व ड्रामा के हीरो एक्टर हैं, इससे कैरेक्टर महान बन जायेगा।

७. जैसा व्यवहार आप दूसरों से चाहते हो, वैसे ही व्यवहार दूसरों से करो। यह सत्य है कि जो व्यक्ति दूसरों से जैसा व्यवहार करता है, उसे सदा वैसा ही व्यवहार मिलता है। अपमान करने वाले को अपमान व महिमा करने वाले को महिम, निन्दक को निन्दा व स्वमान देने वाले को स्वमान प्राप्त होता है। तुम भगवान की सन्तान हो, ब्राह्मण कुल की शान हो, अपने

रॉयल व्यवहार से सभी को सुख प्रदान करो।

९. ये ड्रामा पूर्ण रूप से कल्याणकारी है। हर आत्मा अपना–अपना पार्ट बजा रही है। इसलिये सबके पार्ट को देखते हुए साक्षी हो जाओ। अपना पार्ट भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा रहेंगे तो साथी के साथ का अनुभव सहज होगा और साक्षात्कार मूर्त बन जायेंगे। जो ज्ञानी हैं वे साक्षी हैं। जो साक्षी नहीं वे चिन्तित है उनके ही मन में क्या क्यों के प्रश्न उठ रहे है अतः साक्षी रहकर इस विश्व ड्रामा के घर सीन का आनन्द लो।

६. तुम्हारे बोल दूसरों के लिए वरदान बन सकते हैं। तुम्हारे बोल दूसरों के कष्ट मिटा सकते हैं। इसलिए ऐसे बोल बोलो जो रिकार्ड करने लायक हों, जिसे लोग सुनना चाहे। तुम्हारे सुखदाई बोल तुम्हें भी सुख देंगे। कटु वचन आन्तरिक कड़वाहट के प्रतीक हैं। तुम्हारे बोल बाप जैसे अनमोल हों। यदि सत्य कड़वा भी हो तो उसे अपनी मृदुता से मधुर बना दो।

१०. "मेरा कुछ भी नहीं है"–यही स्थिति प्राप्त करना हमारे जीवन का लक्ष्य है। चेक करते चलें कि हमारे मन में कहां कहां आसक्तियां है। स्वयं को पूर्णतः अनासक्त बनाने से ही सहज सम्पूर्णता की मंजिल मिलेगी। जिन्हें सम्पूर्णता का सुख लेना है..... उन्हें चारो और से आसक्ति निकाल कर स्वयं को विदेही स्थिति में स्थित करना होगा।

११. तुम्हें ये संसार बहुत ऊंची नजरों से देख रहा है..... तुम्हारी दृष्टि दूसरों को सुख का अनुभव कराती रहे.... तुम्हारा मुख सभी पर वरदानों की वर्षा करता रहे तभी तुम्हारा जीवन सफल माना जायेगा। ये समय तुम्हारे लिये वरदान है, जो समय को पहचानता है वह महान बन जाता है। जो समय को नष्ट करता है एक दिन आता है समय भी उसे नष्ट कर देता है। इसलिये समय को महत्व दो तो संसार भी तुम्हें महत्व देगा। ये समय है जन्म जन्म का भाग्य बनाने का।

१२. ये विश्व ड्रामा पूर्व निश्चित है, इस रहस्य पर अच्छी तरह चिन्तन करके निश्चिन्त हो जाओ। तुम्हारी निश्चिन्त स्थिति अनेकों को निश्चिन्त करेगी और मनुष्य आत्माएं आने जीवन का सच्चा सुख ले सकेगी। जैसे ये ड्रामा

बाबा को प्रिय हैं, वैसे ही ड्रामा का प्रत्येक दृश्य व प्रत्येक एक्टर जब भी प्रिय लगेंगे तो हम बाप समान बन जायेंगे। सच्चा योगी वास्तव में वही है जिसे न कुछ प्रिय हो, न अप्रिय ... अर्थात् जो पूर्णतया साक्षी हो।

१३. अन्त में सिवाय एक बाप के कुछ भी याद न आवे..... ये है तुम्हारी कर्मातीत स्थिति। इसके लिये अशरीरीपन व भाई–भाई की स्थिति का व दृष्टि से पक्का अभ्यास होना चाहिये। जिन्होंने लम्बा समय अशरीरी स्थिति में व्यतीत किया होगा, जिन्होंने स्वयं को पूर्णतया कर्मबन्धन मुक्त बनाया होगा, जो निरन्तर एक की ही याद में लम्बा समय रहे होंगे, वहीं अन्त में कर्मातीत होंगे।

१४. संगमयुग पर तुम जितना चाहो अपना भाग्य बना सकते हो। ऐसा न हो कि जब भगवान खुले हाथ भाग्य बांटने आया है और तुम कहीं ओर ही लगे रह जाओ। श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा ही होता है। तुम्हारा उज्जवल भविष्य तुम्हारा आह्वान कर रहा हैं। अब तुम्हारे भाग्य ने करवट बदली है..... पर तुम करवट बदल कर सो न जाना।

"निस्वार्थ भावना और निर्दोष दृष्टि" ये सम्पूर्णता की समीपता की पहचान है। स्वार्थ भावना मनुष्य के जीवन में समस्याएं पैदा करती है और भावनाओं को हीन करके उच्च संस्कारों से नीचे उतारती है। कोई जो कुछ भी कर रहा है वह नाटक के बन्धन में बंधा है, इसलिये वास्तव में तो वह निर्दोष है। यह दृष्टि परस्पर स्नेह बढ़ाती है, निरसंकल्प रहने में मदद करती है व आनन्द की अनुभूति कराती है।

तुम दूसरों को सुख दोगे तो वह कई गुना होकर वापिस तुम्हारे पास आ जायेगा और यदि तुम कड़वे बोल बोलकर दूसरों का सुख छीनोगे तो तुम्हारा सुख तुम्हें छोड़ कर दूर चला जायगा। इसलिये सुखदेव बनो। कलियुगी काली रातों में तुम्हारा सुखी जीवन मनुष्यों के दुख दूर करेगा। तुम्हारी उपस्थिति दुखदाई वातावरण में सुख की किरणें प्रवाहित करेगी। तुम सुखदाता के बच्चे हो। सुखों की बौछार सभी पर करते रहो।

बदला तो सभी लेते हैं, परन्तु क्षमा, महान पुरुष ही करते हैं। सहयोग न मिलने पर कार्य तो सभी छोड़ देते हैं, परन्तु हर परिस्थिति में कार्य को

पूर्ण करती है, वे चुनी हुई आत्माएं, जिन्हें भगवान का आशीर्वाद प्राप्त है। अपनी हिम्मत व साहस को कभी कम न होने दो.... जो परिस्थितियों वश इन गुणों का त्याग नहीं करते, वे सफलता के शिखर पर पहुंच जाते हैं, उन्हें कोई सहयोग दे या न दे, भगवान तो सदा उनका साथी सहयोगी होता ही है।